
घोटाला

गड़बड़ घोटाला

सफ़दर हाश्मी

द्वारा रचित कविता

रेखाचित्र

सुरेश बी वी



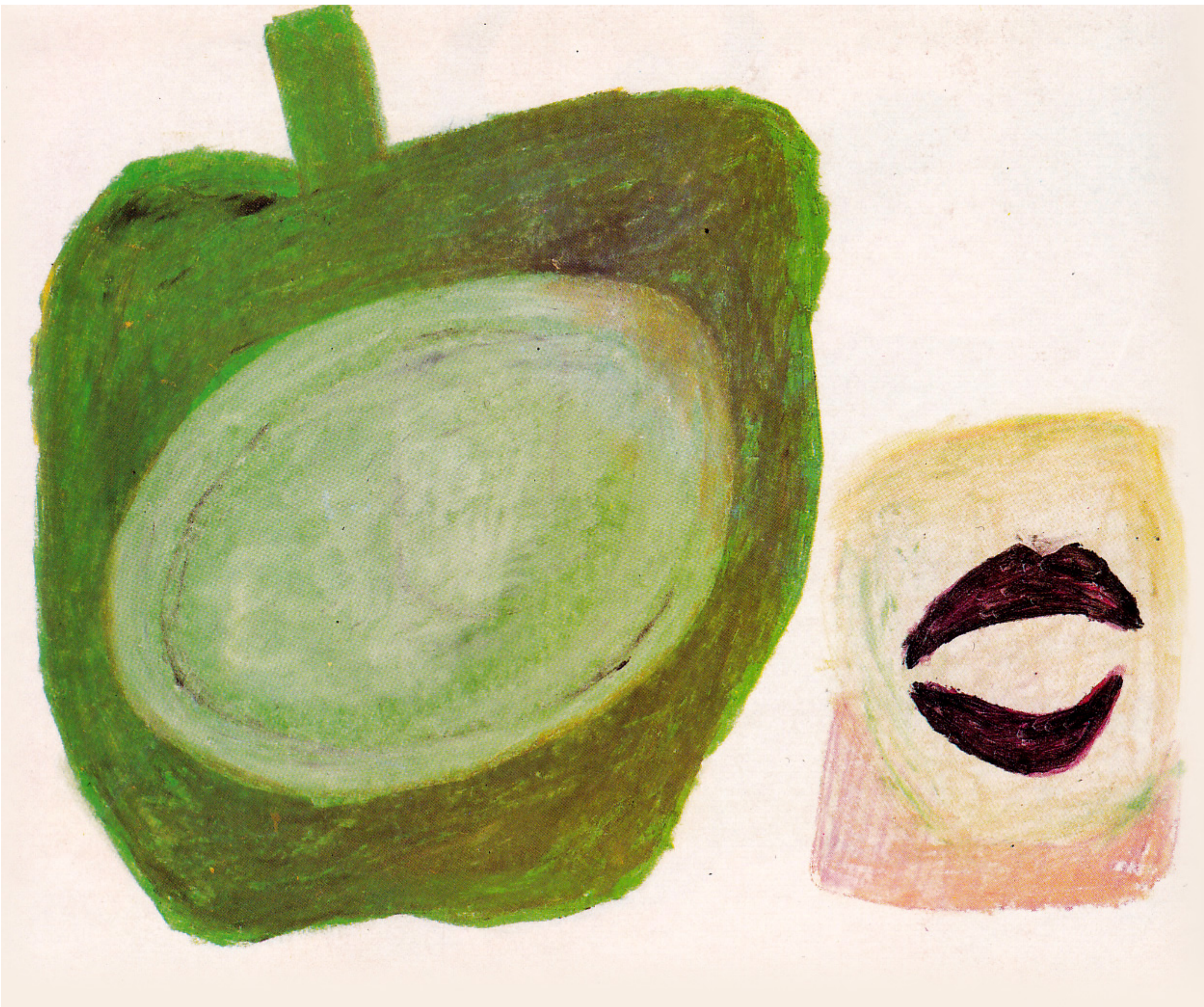
यह कैसा है घोटाला

कि चाबी में है ताला

कमरे के अंदर घर है

और गाय में है गोशाला।



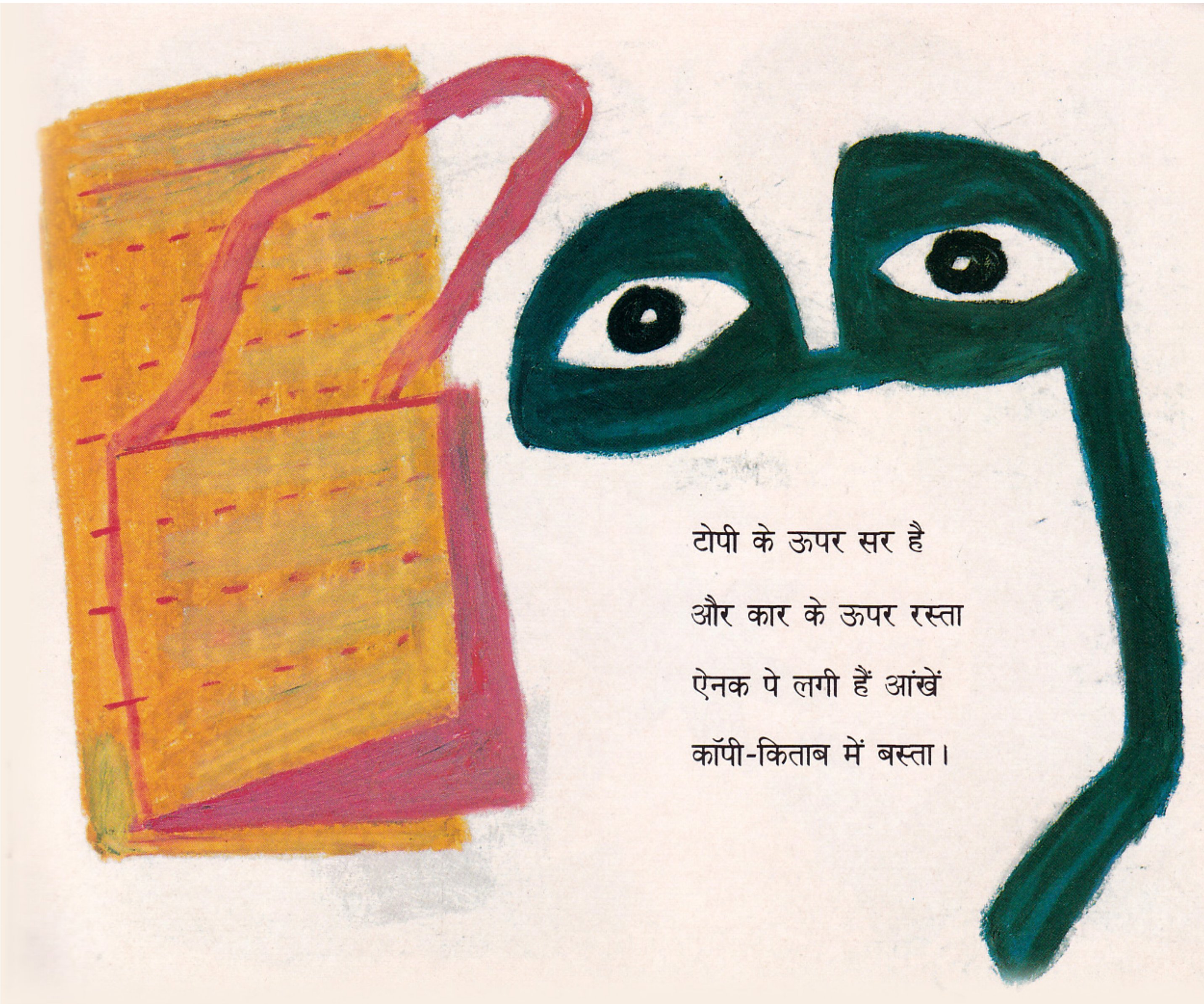




दांतों के अंदर मुंह है
और सब्ज़ी में है थाली
रूई के अन्दर तकिया
और चाय के अन्दर प्याली।

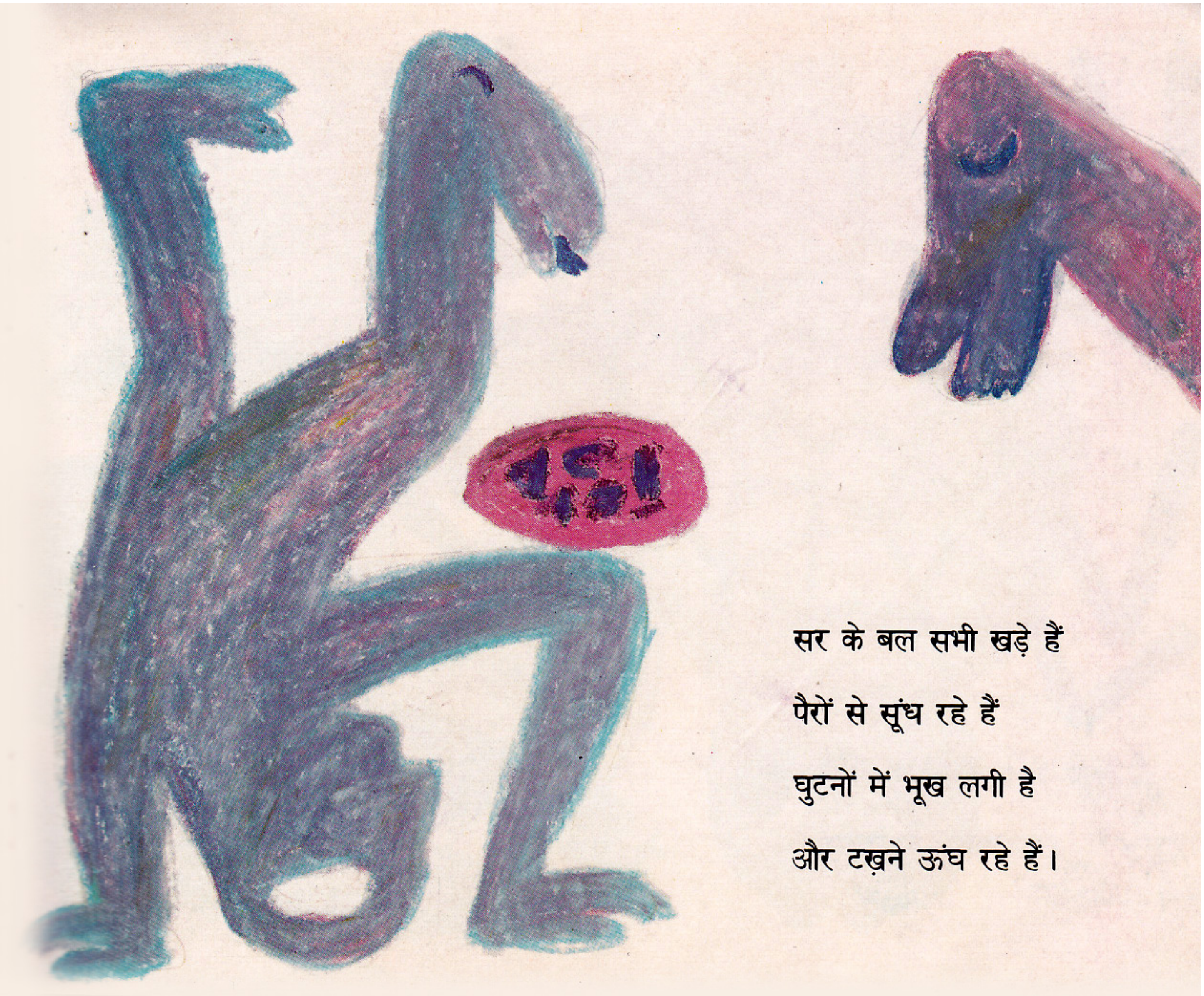






टोपी के ऊपर सर है
और कार के ऊपर रस्ता
ऐनक पे लगी हैं आंखें
कॉपी-किताब में बस्ता।





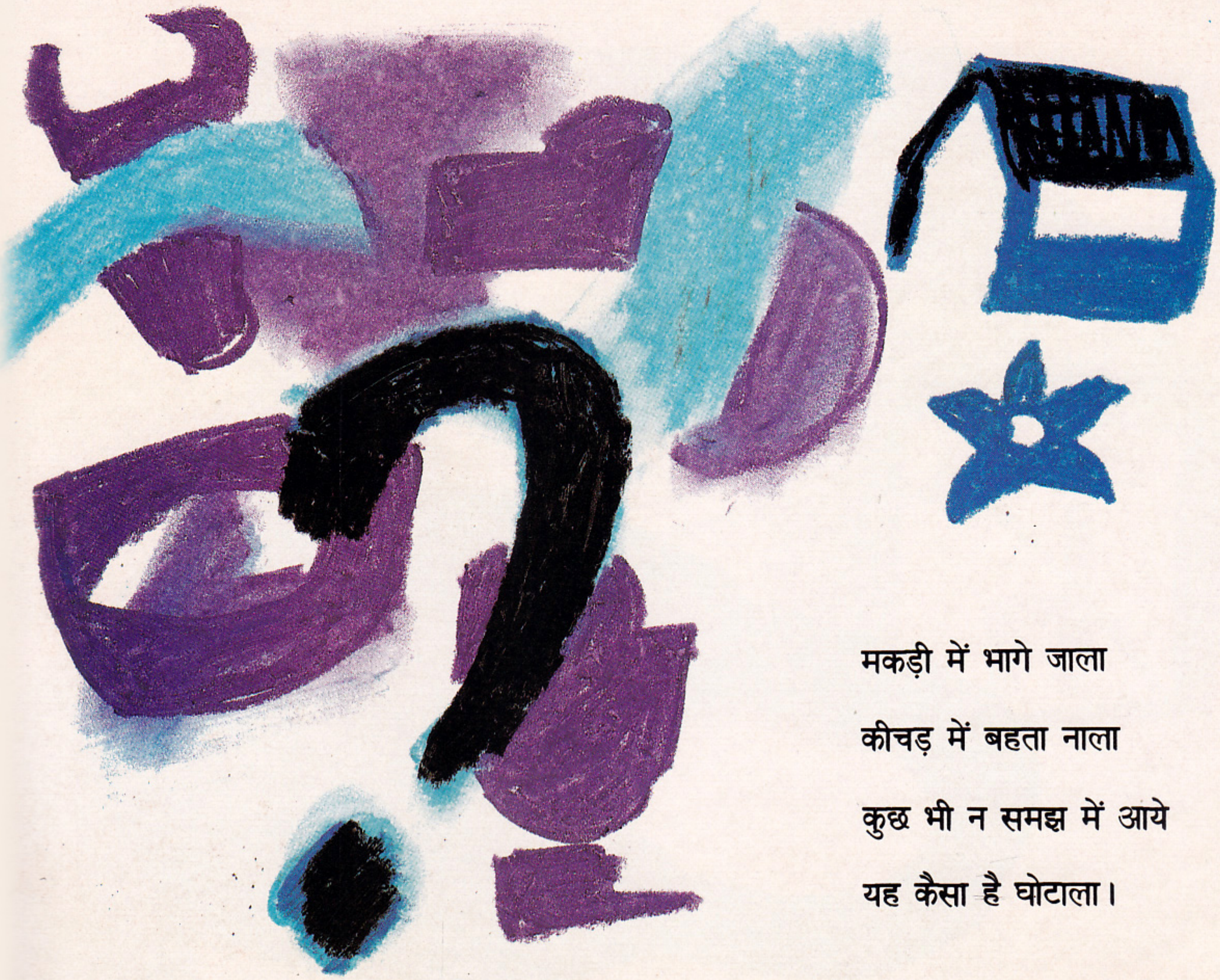
सर के बल सभी खड़े हैं

पैरों से सूंध रहे हैं

घुटनों में भूख लगी है

और टख़ने ऊंघ रहे हैं।





मकड़ी में भागे जाला

कीचड़ में बहता नाला

कुछ भी न समझ में आये

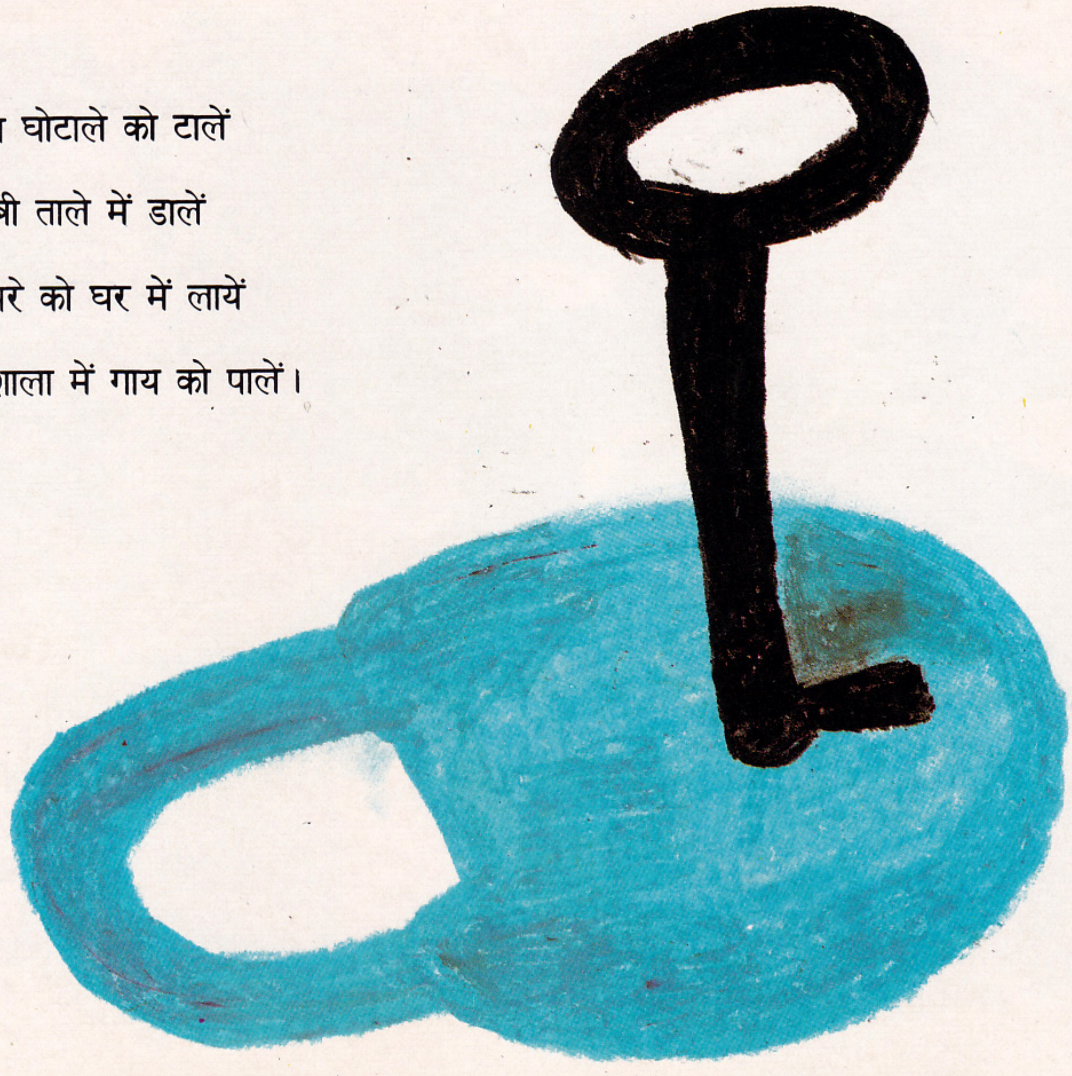
यह कैसा है घोटाला।

इस घोटाले को टालें

चाबी ताले में डालें

कमरे को घर में लायें

गोशाला में गाय को पालें।





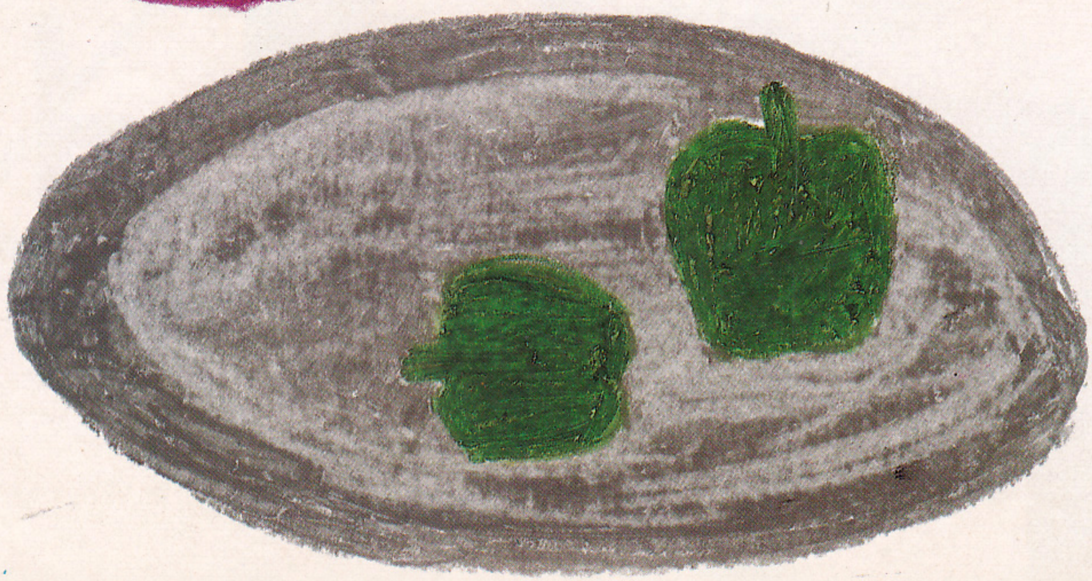


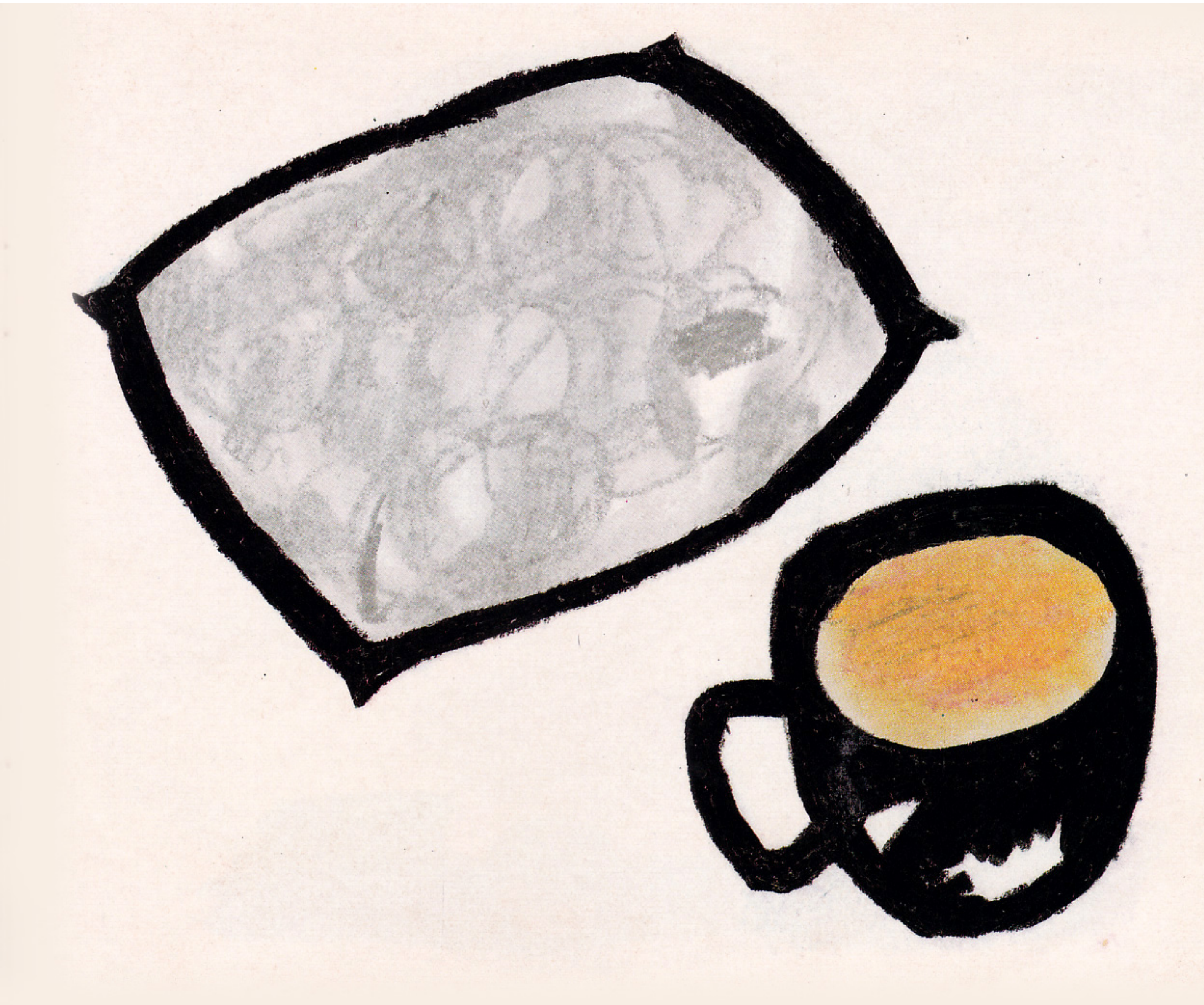
मुंह में दांत लगायें

सब्ज़ी से भर लें थाली

रूई तकिए में ठूंसें

चाय से भर लें प्याली।



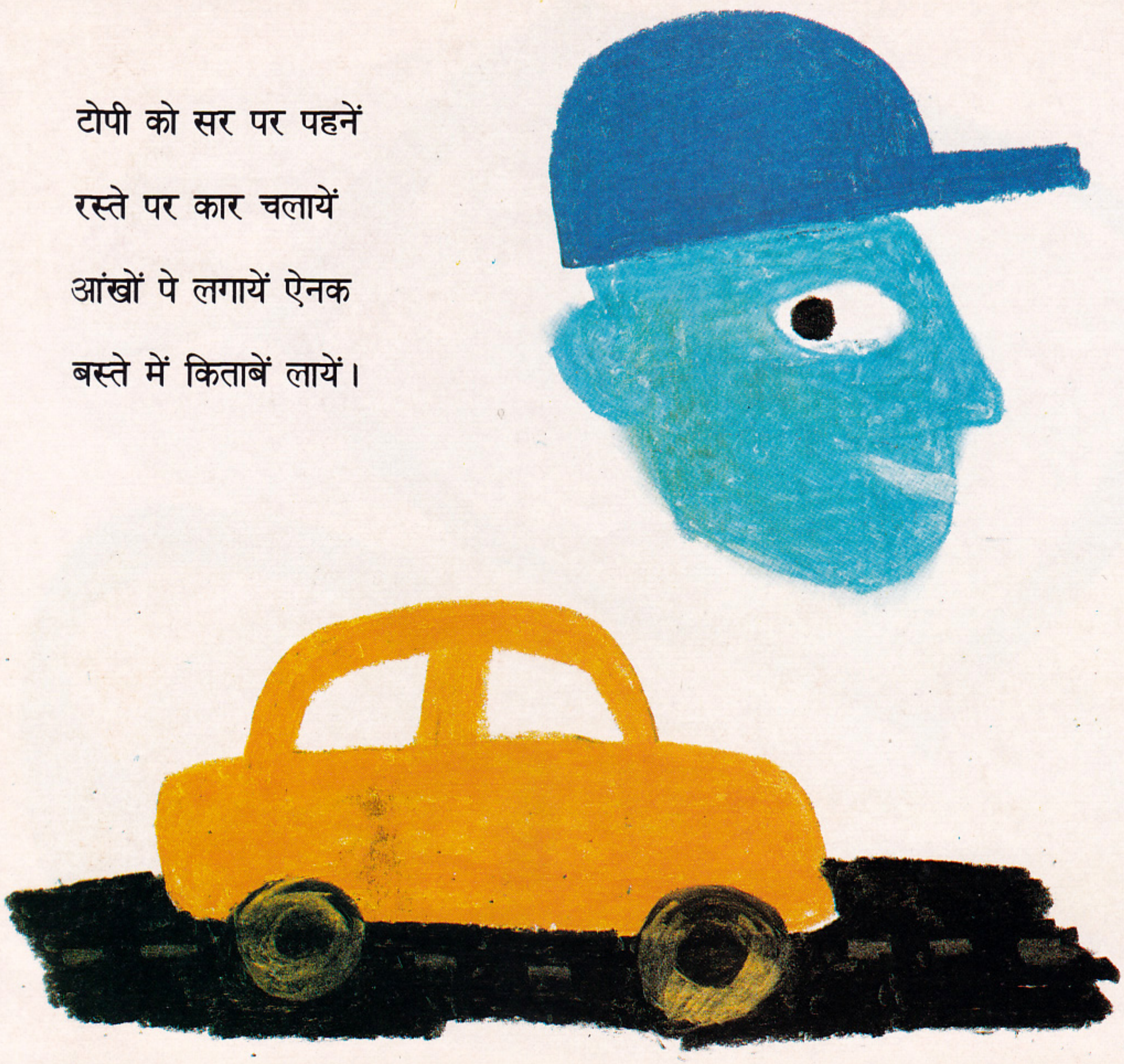


टोपी को सर पर पहनें

रस्ते पर कार चलायें

आंखों पे लगायें ऐनक

बस्ते में किताबें लायें।







पैरों पे खड़े हो जायें

और नाक से खुशबू सूंघें

भर पेट उड़ायें खाना

और आंख मूंद के ऊंघें।







जाले में मकड़ी भागे

कीचड़ नाले में बहता

अब सब कुछ समझ में आये

कुछ घोटाला ना रहता।

Rs 10/-

मलयश्री हाशमी द्वारा सहमत की ओर से प्रकाशित ८ विट्ठल भाई पटेल हाऊस, रफी मार्ग, नई दिल्ली-११०००१
मुद्रक अजंता ऑफसेट एंड पैकेजिंग्स लिमिटेड ९५-बी, वजीरपुर इंडस्ट्रीयल एरिया, दिल्ली-११००५२